मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ का अनावरण : मुक्तिबोध की कहानियों के संदर्भ में

अनीता
शोधार्थी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
फोन – 9999424488
ईमेल – annuexpert87@gmail.com

कहानीकार गजानन माधव मुक्तिबोध कवि तथा आलोचक मुक्तिबोध से कम लक्षणीय नहीं हैं। कविताओं की तुलना में उनकी कहानियां संख्या में कम है, मगर आशय एवं अभिव्यक्ति में भी दूसरे कहानी कारों की कहानियों से बेजोड़ हैं। मुक्तिबोध ने कुल 40 कहानियां लिखी जिनमें से 16 अधूरी हैं। उनके जीवनकाल में कुछ कहानियां कल्पना, हंस, नया खून, नई कहानी आदि पत्रिकाओं में जरूर प्रकाशित हुई मगर संकलन रूप में उनका प्रकाशन उनकी मृत्यु के पश्चात ही हो पाया। सन 1967 में 'काठ का सपना' का और सन 1968 में 'सतह से उठता आदमी' का प्रकाशन हुआ। मुक्तिबोध की सभी कहानियां एक ही स्थान में सन 1980 में प्रकाशित 'मुक्तिबोध रचनावली - 3' में संग्रहित हैं।

मुक्तिबोध की कहानियां प्रधानतः निम्न मध्यवर्गीय जिंदगी की बोलती तस्वीरें हैं। इस वर्ग के कतिपय अभावों, विकृतियों, असंग अंखियों को उखाड़ने वाली इन कहानियों में स्थान स्थान पर गरीबी के दर्शन होते हैं। उस गरीबी मनुष्य को सामान्य जरूरतों से वंचित रखती है, जो उसकी आशा - आकांक्षाओं को चूर चूर कर देती है, जो उसे भूख की खाई में ढकेल देती है। गरीबी के जितने भी कष्टकर परिणाम हो सकते हैं वह हमें मुक्तिबोध की कहानियों में दिखाई देते हैं। अत्यल्प वेतन में पारिवारिक जरूरतों को पूरा ना करने के कारण ग्रामीण शिक्षक द्वारा आत्महत्या करना इन परिणामों में सर्वाधिक कष्टकर परिणाम है। ' उपसंहार' कहानी में इसे पढ़ा जा सकता है। भूख मिटाने की आशा से गई एक भिखारिन का पुलिस कॉन्स्टेबल की वासना का शिकार होना भी कम कष्टकर नहीं है। 'आखेट' कहानी हमें इस कष्ट कर परिणाम से रूबरू कराती है। परिवार चलाने के लिए लगातार कर्जा लेते लेते अधिक गरीब होते क्लर्क, अपने कर्तव्य को पूरा ना करने के परिणाम स्वरुप पारिवारिक झगड़ों से परेशान होते बाबू, आर्थिक तनाव से मुक्ति हेतु झूठ का पल्ला पकड़ते पतिदेव, बेकारी से छुटकारा पाने के लिए सिलसिले में जानलेवा काम करने के लिए विवश युवक - गरीबी ऐसे दर्जनों रूप हमें मुक्तिबोध की कहानियों में मिलते हैं।

अभावग्रस्त जीवन के विविध रूपों के साथ ही निम्न मध्यवर्गीय की अंय कई प्रवृतियां, विवृतियां, असंगतियां, रीति नीतियां और समस्याएं मुक्तिबोध की कहानियों में अपने असली रुप में दिखाई देती हैं। सामाजिक एवं पारिवारिक मर्यादाएं तथा उनके परिणाम स्वरुप उत्पन्न यौन कुंठाएं, क्रांति के ख्यालों में समय बिताते युवक, बाल बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते माता पिता, उनकी कामनाओं को ढहाने वाले युवक, नीति अनीति संबंधी युवकों की नई दृष्टि, रुपयों के अति मोह के कारण किया जाने वाला विकृत आचरण, वि वृत्तियों के प्रतिवर्ती तीखी प्रतिक्रियाएं अपनी गलतियों का भाव होने पर हृदय में उभरती सात्विक भावनाएं, मनुष्य में स्थित पशुता और उसी मनुष्य में उभरता देवत्व, जीवन में मैत्री का महत्व, कचहरियों में चलने वाली राजनीति, उसके शिकार कर्मचारी, उनके तनाव, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते युवक, सरकारी शक्तियों द्वारा उनका दामन, विरोधी दल के नेताओं पर झूठे इल्जाम लगाकर उनकी बदनामी ,शिक्षा संस्थाओं में हो रहे भ्रष्टाचार, आर्थिक लाभ पाने के चक्कर में इन भ्रष्टाचारों का समर्थन करने की विवशता, कुलीनता को बनाए रखने के आग्रह से पुत्रों पर ला दे गए बंधन और उनकी तीखी प्रतिक्रियाएं , उससे तहस-नहस होते परिवार, इन स्थितियों से लाभ उठाने वाले स्वार्थी लोग - मुक्तिबोध की कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय जीवन के लिए विविध पक्ष कभी प्रत्यक्ष और कभी अप्रत्यक्ष रूप से उठाए गए हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मुक्तिबोध की कहानियों में अन्य वर्ग के जीवन - संदर्भों को बिल्कुल ही स्थान नहीं है। सच तो यह है कि मध्य वर्ग की जिंदगी, जो मुक्तिबोध की कहानियों में इतनी गहरा कर छा गई है उसको ऐसा बनाने में मुक्तिबोध द्वारा अन्य वर्गों के पात्रों तथा उनकी गतिविधियों का किंचित ही सही, साधन रूप अंकन कारण पर गया है। उनकी कहानियों में कुलीन परिवार हैं, कचहरियों के बड़े ओहदेदार हैं, सर्कस के मैनेजर हैं, प्रांतीय सरकारों के मिनिस्टर हैं। सांसद है, विधायक है, वकील है, संपादक हैं। मुक्तिबोध ने इन पात्रों के माध्यम से अन्य वर्गीय प्रवृतियों की झलक दिलाई है। प्रवृतियां कहानी में पृष्ठभूमि का कार्य करती दिखाई देती है।

यहां पर सवाल पैदा होता है कि क्या मध्यवर्गीय जिंदगी के यह विविध पक्ष मुक्तिबोध की कहानियों के माध्यम से हिंदी में पहली बार आए ? क्या इन पक्षों का अंकन ही कहानीकार मुक्तिबोध की विलक्षणता का कारण है ? प्रेमचंद, उपेंद्रनाथ अश्क, कौशिक, किशोरीदास वाजपेयी, यशपाल के कहानी साहित्य में मध्यवर्ग के अंकन को देखते हुए यह कहना साहसपूर्ण होगा। फिर कहानीकार मुक्तिबोध का अनोखापन किस बात में है ? मुक्तिबोध ने हिंदी कहानी को नया शिल्प दिया। इतना नया कि कई बार ऐसा लगता है कि उनकी कहानियां कहानी विधा की तत्व गत सीमाओं को लांघकर कभी लेख, कभी रेखाचित्र, कभी संस्मरण और कभी रिपोर्ताज का आभास देती हैं। निवेदन शैलियों का यह मिश्रण मुक्तिबोध की कहानियों को एक अलग पहचान देता है।

परंपरागत हिंदी कथा में बाह्य घटना प्रसंगों का महत्व था। घटनाओं को सिलसिलेवार प्रस्तुत किया जाता था। घटना प्रसंगों का कौतुहल वर्धक संगुफन कर कहानी को रोचक बनाया जाता था। पाठक को को कथा रस में डुबोया जाता था। पठनीयता को निकस मारने से परंपरा गत कहानी सहज बोधगम्य थी। मुक्तिबोध की कहानियां इस ढांचे को तोड़ती है। संभवतः मुक्तिबोध यह मानकर चले थे कि सम्मान कराना ही कहानी का प्रयोजन नहीं। पाठकों को चिंतनशील बनाना भी उसका प्रयोजन हो। यही कारण है कि मुक्तिबोध पात्रों और जीवनानुभवों के सूक्ष्म अंकन को कहानी के लिए महत्वपूर्ण तत्व स्वीकार करते थे ना कि कथानक को। 'भूत का उपचार' शीर्षक कहानी में उनका कथन इस बात का प्रमाण है - 'कहानी ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया।' मैं पूछता हूं कि क्यों ? कहानी में कथानक नहीं था, लेकिन पात्र तो था। जिंदगी तो थी।" (मुक्तिबोध प्रश्नावली - 03, पृष्ठ संख्या - 135) इस कहानी में कथानक बहुत ही विरल है। बाह्य घटनाएं और प्रसंग ना के बराबर है। लेखक ने एक कहानी लिखी। 4 पृष्ठ लिखने के बाद वह आगे नहीं बढ़ सकी। इस घटना के निवेदन के बाद आगे की पूरी कहानी में या तो लेखक का आत्मनिवेदन है या उस पात्र का। उनकी 'अंधेरे में', 'चाबुक', 'उपसंहार', 'एक दाखिल दफ्तर सांझ' शीर्षक कहानियों में भी कथानक की विरलता देखी जा सकती है। उदाहरणार्थ - 'अंधेरे में' कहानी का युवक रेल यात्रा कर एक स्टेशन पर रात बारह के लगभग उतरता है। स्टेशन से गंतव्य स्थान तक जाने के लिए वह पैदल निकल पड़ता है। बीच में वह एक चाय की दुकान पर बैठता है, जहां चाय की दुकान के मालिक, चाय पीने के लिए आए तांगे वाले, पुलिस सिपाही, मौलवी, आदि के जीवनानुभव सुनने का अवसर मिलता है। यह अनुभव निम्न मध्यम वर्ग के हैं जिनमें गाली-गलौज करते तांगे वाले, बोझ उठाते मजदूर, अनुचित व्यवहार करते पुलिस कर्मचारी भी हैं। युवक दुकान से आगे चलने लगता है तो अंधेरे के कारण, गली में सोए भिखारियों को देख नहीं पाता। उन पर उसके पैर पड़ते हैं। यह घटना उसके संवेदनशील मन को झकझोर देती है। बस्स, कथा के नाम पर 'अंधेरे में' कहानी के अंतर्गत इतने ही वाह्य प्रसंग हैं। 'चाबुक' कहानी में तो एक क्लर्क कचहरी छूटने के बाद अपने मित्र की प्रतीक्षा करता हुआ दिखाया गया है। एक छोटे से अंतराल में एक आध पात्र का आना-जाना होता है। बाकी सब उस क्लर्क के ख्याल ही ख्याल। इस प्रकार खयालों की अधिकता ने इन कहानियों ने चिंतन प्रधान कहानी का रूप धारण किया है। ' सतह से उठता आदमी', ' दो चेहरे', 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' जैसी कुछेक कहानियों का अपवाद छोड़ दें तो मुक्तिबोध की कहानियां सिलसिले से बताई नहीं जा सकतीं।उनकी कहानियां बार-बार पढ़कर समझने और गुनने की कहानियां हैं।

मुक्तिबोध की कहानियों के कथानक के संदर्भ में एक विशेषता की ओर हमारा ध्यान अवश्य ही चला जाता है। वह है कहानी के भीतर कहानी वाला शिल्प। उनकी बहुत चर्चित कहानियों - 'समझौता', 'पक्षी और दीमक', 'अंधेरे में' - के भीतर दूसरी कहानियां है। कहानी का महत्वपूर्ण पात्र प्राप्त प्रसंग के संदर्भ में अनुकूल, औचित्यपूर्ण तथा झकझोर देने वाली कहानी कर देता है। उदाहरणार्थ ' समझौता' कहानी में मेहरबान सिंह नामक अधिकारी अपने मातहत के कर्मचारी को एक बेकार युवक की कथा बताता है जिसे सर्कस में नौकरी पाने के लिए जानलेवा यंत्रताओं से गुजरना पड़ता है। यह कहानी सूचित करती है कि जिस

प्रकार सर्कस के रीछ और शेर को एक दूसरे से जूझने का नाटक करना पड़ता है उसी प्रकार कचहरियों में भी नोटिस देने एक्सप्लेनेशन पूछने आदि के नाटक करने पड़ते हैं। यह एक प्रकार का समझौता है जो जीवन यापन में कई अवसरों पर जरूरी हो जाता है। मुक्तिबोध की कहानियों के भीतर की प्रतिकात्मक कहानियां निश्चय ही प्रभावी हैं।

मुक्तिबोध की कहानियों के पात्रों की अलग पहचान है। यह पहचान उनको लेखक की पात्र विषयक मान्यताओं के कारण प्राप्त हुई है। 'चाबुक' कहानी के एक वाक्य में यह मान्यता प्रतिबिंबित हुई है। कहानी के पात्र की ओर देखकर कहानी का 'मैं' कहता है - 'वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसके आर पार देखा जा सकता है।' (मुक्तिबोध रचनावली - 3, पृष्ठ संख्या - 95) यहां पर दो बातें हैं जो एक दूसरे के लिए पूरक कही जा सकती हैं। एक पात्र पक्ष की योग्यता और दूसरी लेखक पक्ष की योग्यता। पहले प्रकार की योग्यता उन पात्रों में होती है जो साधारण होते हुए भी किसी विलक्षणता के कारण लेखक का ध्यान आकर्षित करते हैं। दूसरे प्रकार की योग्यता आर पार देख तकनीकी योग्यता है जो उन लेखकों में मिलती है जिनके पास अंतर्दृष्टि होती है, सूक्ष्म अवलोकन क्षमता होती है और होती है इन दोनों के प्रति न्याय करने वाले सूक्ष्म वर्णन क्षमता। मुक्तिबोध की कहानियों की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि दोनों पक्षों की योग्यताएं परस्पर पूरक बनकर कहानियों में अविस्मरणीय पात्रों की सृष्टि करने में सफल सिद्ध हुई हैं। 'खलील काश' का खलील, 'वह' कहानी का प्रगतिशील युवक, 'आखेट' का कांस्टेबल मोहब्बत सिंह, 'मोह और मरण' का वृद्ध, 'मैत्री की मांग' की सुशीला, 'एक दाखिल दफ्तर सांझ' का रामेश्वर, 'अंधेरे में' का युवक, सैय्यद और हजरत अली, 'उप संहार' का राम लाल अग्रवाल, ग्रामीण शिक्षक देशपांडे, 'प्रश्न' की सुशीला, 'क्लॉड ईथरली' का सी. आई. डी. कर्मचारी - में ये सभी पात्र अविस्मरणीय है।

मुक्तिबोध के पात्रों की अविस्मरणीय ताका प्रधान कारण है उनकी विचारशीलता। यह पात्र जिंदगी के किसी ना किसी पहलू को लेकर विचार करते हुए दिखाई देते हैं। सामान्य बौद्धिक कुवत वाले पात्र अपनी परिस्थिति के बारे में, सफलता विफलता के बारे में सोचते हैं, जबकि तीक्ष्ण बुद्धि वाले पात्र ग्रहण विषय की जड़ों तक जाकर सोचते हैं। 'क्लॉड ईतरली' कहानी देखी जा सकती है। इसमें दो पात्र हैं। एक सी. आई. डी. का कर्मचारी और दूसरा कहानी का 'मैं'। दोनों के संबंधों के माध्यम से भारतीय मानसिकता की सटीक व्याख्या की गई है। सी. आई. डी. का आदमी मैकमिलन के कथन का हवाला देकर यह तथ्य सामने रखना है की भारत यद्यपि अमेरिका के सैनिकी गुट में नहीं है किंतु उसकी संस्कृति और आला अमेरिका के साथ है। सी. आई. डी. का कर्मचारी कहता है कि लेखक और कवियों तक में यह बात देखी जाती है….. आजकल के लेखक और कवि अमेरिकी ब्रिटिश तथा पश्चिमी यूरोपीय साहित्य तथा विचारधाराओं में गोते लगाते हैं और वहां से अपनी आत्मा को शिक्षा और संस्कृति प्रदान करते हैं।" (मुक्तिबोध प्रश्नावली - 3, पृष्ठ संख्या 174)

समाज में कई लोग युद्ध के भीषण परिणामों तथा अन्य …… चारों को लेकर बेचैन रहते हैं। सी. आई. डी. के आदमी ने अमेरिकन वैमानिक क्लॉड ईथरली का उदाहरण देकर इस मानसिक तथ्य की व्याख्या की है। यह व्याख्या उसकी बौद्धिक तेजस्विता, गहन विचार शीलता और विश्लेषण रुकता पर प्रकाश डालती है। 'क्लॉड ईथरली' अनु युद्ध का विरोध करने वाली आत्मा की आवाज का दूसरा नाम है।….. वह आध्यात्मिक अशांति का, आध्यात्मिक उद्विग्नता का ज्वलंत प्रतीक है। ….. इस आध्यात्मिक अशांति, आध्यात्मिक उद्विग्नता को समझने वाले लोग कितने हैं ? उन्हें विचित्र, विलक्षण, विक्षिप्त कह कर पागल खाने में डालने की इच्छा रखने वाले लोग ना जाने कितने हैं। इसलिए पुराने जमाने में हमारे बहुतेरे विद्रोही संतों को भी पागल कहा गया। आज भी बहुतो को पागल कहा जाता है।' (मुक्तिबोध रचनावली - 3, पृष्ठ संख्या - 177) इस प्रकार, मुक्तिबोध के पात्र संदर्भित विषय पर अपने गहन चिंतन, अध्ययन से निष्पन्न विचारों को प्रतिपक्ष के सामने रख देते हैं। मुक्तिबोध की लगभग सभी कहानियों में अधिकतर इस प्रकार की वैचारिकता से भरपूर हैं। अतः उनकी कहानियां चिंतन प्रधान कहानी वर्ग में आती हैं। बंगाल के अकाल का सही कारण, नौकरी में समय समय पर बदलती मैत्री, प्रगतिवाद के लिए उपेक्षित, ईमानदारी, कारोबारी दुनिया में चलने वाली मक्कारी, मजदूरों में उभरती चेतना, प्रजातंत्र में जनता और जनप्रतिनिधियों के कर्तव्य, व्यवस्था के नाम पर किया जाने वाला कानून का दुरुपयोग, तथाकथित पवित्र लोगों के अपवित्र कार्य, चरित्र बोध की कठिनता, गणित तथा प्रकृति के सूत्रों में साम्य भेद, आर्थिक उन्नति के पीछे पढ़कर किया जाने वाला आदर्शों का हनन आदि कई बिंदु है जिन पर मुक्तिबोध के पात्रों के विचार हमें सोचने के लिए प्रवृत्त करते हैं।

मनुष्य स्वभाव का अध्ययन करने या पात्रों के आर पार देखने में मुक्तिबोध की गहरी रुचि का एक परिणाम हमने उनके पात्रों की वैचारिकता में देखा। दूसरा परिणाम पात्रों के वाहे तथा आंतरिक व्यक्तित्व के अवलोकन, विवेचन - विश्लेषण तथा उसके सूक्ष्म अंकन में देखा जा सकता है।

मुक्तिबोध के लगभग सभी प्रमुख पात्र अपने वाक्य व्यक्तित्व के साथ अवतरित हुए हैं। अंगलेट, रंग, वेशभूषा और मुखमुद्रा चित्रात्मक अंकन के कारण वे हमारे सामने मूर्त हो उठते हैं। हमें उनके बाह्य रूप के संबंध में कल्पना करने की जरूरत नहीं पड़ती। उदाहरणार्थ 'आखेट' कहानी के कांस्टेबल का बाह्य व्यक्तित्व दुष्ट अवय है "उसका मोटा डील डौल, बड़ा सिर, राजपूतानी सीधी नाक, आंखें बड़ी और पैनी मानो वह सबको डाकू समझ रहा हो। उसको डरावनी, बड़ी घनी मुझे सबके हृदय में बीती पैदा कर देती। वह अधिक भावना इसलिए लगता कि उसकी घनी भृकुटियां प्रश्न और उत्तर के साथ साथ वक्र होने लगती। ….. देखभाल इंस्पेक्टर जनरल आने वाला था, वह आज अधिक सतर्क, अधिक डरावना और अंदर से अधिक खुश था। सतर्कता की भौहों को कठिन वझता से मिलकर भीषण हो उठती थी। उसकी बड़ी पैनी आंखे आज अधिक शंकाशील थी। उसकी गुच्छेदार मुझे उठावकर गालों पर बांकपन लिए हुए थीं।" (मुक्तिबोध रचनावली -3 पृष्ठ संख्या - 31,32) इस प्रकार का सूक्ष्म वर्णन सूक्ष्म अवलोकन शक्ति के अभाव में असंभव है।

मुक्तिबोध ने पात्रों के आंतरिक व्यक्तित्व, मनोदशाओं तथा हृदय के भावों के अंकन हेतु एकाधिक पद्धतियां अपना ही हैं। तभी वह पूर्व प्रसंग पर पात्र की प्रतिक्रिया का ढंग अपनाते हैं, कभी पात्र की प्रतीति या अनुभूति का वर्णन करते हैं, कभी दूसरे पात्र द्वारा स्वभाव एवं गुण दोष का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं और कभी अनुभव का वर्णन कर उसके हृदय अस्त भावों की व्यंजना करते हैं। यह सभी पद्धतियां अगर एक ही कहानी में देखनी हो तो 'मोह और मरण' कहानी देखी जा सकती है। प्रस्तुत कहानी के वृद्ध के अविश्वास, संशय, दुख उसी के विचारों में व्यक्त हुए हैं। जैसे पूरा विश्वास भरी उत्सुक आंखों से देखता रहा, "शायद है, बहुत कम दे दें, शायद इन्हें नियम मालूम हो और मेरी आशाओं पर पानी फिर जाए।" (मुक्तिबोध रत्नावली - 3 पृष्ठ संख्या 38)। लेखक द्वारा बूढ़े के भाव का वर्णन इस प्रकार किया गया है - 'जब उस वृद्ध ने सब और देखकर निश्चय कर लिया कि अब कोई नहीं बचा है, तो उसके गहरे स्तरों के नीचे अटका हुआ हर्ष का वेगवान फुहार सब प्रकार के बंधन तोड़ता हुआ बेरोक हास्य से गूंज उठा। (वही, पृष्ठ संख्या - 39) बहू द्वारा यह कह देने पर कि ' तुम्हें बुढ़ापे में भी लालच ना छूटा' बूढ़ा वृद्ध हुआ। उनका कथन उसके क्रोध को उजागर करता है।' "मैं लालची हूं बदमाश हूं …. और तू तो बहुत अच्छी है….. तुझको भिखमंगे मां-बाप से छुड़ाकर यहां रखा….. और तेरे यह मिजाज। (वह, पृष्ठ संख्या 40) अनुभव के द्वारा दूल्हे के क्रोध की व्यंजना देखिए - 'उसकी आवाज कांप रही थी, उसका शरीर कांप रहा था। उसका दम घुट रहा था। उसका हृदय अंदर ही अंदर धंसने लगा, कलेजा धड़कने लगा और आह निकलने लगी। उसका सिर गरम हो गया था।' (वह, पृष्ठ संख्या- 40) पात्रों की प्रतीति द्वारा उसकी हृदय दशा की अभिव्यक्ति देखिए - " उसको लगा मानो उसके पुराने सारे पाप एक एक करके जल रहे हो और उसके अंदर का सात्विक क्रोध सोने के समान शुद्ध होकर निखर रहा हो।" (वही, पृष्ठ संख्या - 42)

मुक्तिबोध की कहानियां वर्णन में रूचि रखने वाली पाठकों की दृष्टि से विशेष आकर्षण का केंद्र है। उनकी कहानियों में वर्णन की अधिकता है। यह अधिकता यूं ही नहीं आई है। मुक्तिबोध खूब घूमते थे। वह चलते हुए सोचते थे और अगल बगल के फलों का सूक्ष्म अवलोकन करते थे। उनका निरंतर सोचना उनके चिंतनशील पात्रों में और सूक्ष्म अवलोकन विविध वर्णनों में प्रतिबिंबित हुआ दिखाई देता है। प्रकृति के नाना दृश्यों, सूनी बावड़ियों, निर्जन रास्तों, पुराने खंडहरों, पठारों पर बसी कॉलोनियों, पुरानी डरावनी इमारतों उसके अंधेरे बरामदों, अंधेरे उजियाले की घटाओं, आकार बदलते बादलों, सूर्योदय एवं सूर्यास्त प्रकाश किरणों आदि के सैकड़ों दृश्य उनकी कहानियों में बिखरे पड़े हैं। अवलोकन तथा अनुभव से प्राप्त कच्ची सामग्री के आदित्य में एक खतरा होता है। वह है वर्णन के मोह में पड़कर प्रसंग के साथ उसकी संगति और औचित्य को नजरअंदाज करना। मुक्तिबोध इस खतरे से बचे हैं। उनके वर्णन के लिए वर्णन की श्रेणी में नहीं आते। उनके वर्णन सूक्ष्म है, मगर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह वैविध्यपूर्ण, प्रसंग के अनुकूल, चरित्र चित्रण की भी दृष्टि से संगत, स्वाभाविक और विश्वसनीय हैं। मनुष्य स्वभाव के विश्लेषण में गहरी रुचि रखने वाले मुक्तिबोध मनुष्य और प्रकृति के दीर्घ साहचर्य जनित अन्योन्य संबंध को खूब गहराई में जानते हो तो इसमें दशाओं के साथ तालमेल बिठाने वाले हैं। एक उदाहरण व्याप्ति होगा - "कचहरी के कथा के अंदर के बड़े-बड़े दस्तखत मर्मर कर रहे थे। दूर पर दिखती हुई सिविल लाइंस की सड़क के बिजली के खंभों की दूरी के बीच में बड़े-बड़े दरख्त के पत्ते नाच रहे थे। वृक्षों

पर छाया हुआ अंधेरा और उनके निचले भाग पर हल्का धुंधला प्रकाश उनके आकार को अधिक घनीभूत और भव्य बना रहा था । वन की, वनस्पति की सुगंध मई की मीठी रात को, कण कण को पुलकित कर रही थी। वर्मा का मन आह्लाद से भर उठा था। रामेश्वर के मन में सरलता छा रही थी।" (मुक्तिबोध प्रश्नावली-3 पृष्ठ संख्या 61-62) मुक्तिबोध की कहानियां इस बात से साबित करती है की वायव्य पूर्ण वर्णन साहित्य को जीवन और प्रकृति के साथ जोड़ने का महत्वपूर्ण जरिया है।

कहानी के परंपरागत शिल्प को तोड़ने के संदर्भ में मुक्तिबोध की कहानियों का उल्लेख अवश्य ही करना होगा। उनकी कहानियां निवेदन सहेलियों का एक नया मिश्रण है। नया इस अर्थ में कि उन्होंने इतिवृत्तात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक आदि परंपरागत शैलियों के मिश्रण में चिंतनात्मक आलेख, चेतना प्रवाह, सिंहावलोकन तथा रिपोर्ताज को भी मिला दिया है। यह अत्यधिक मिश्रण विधा विशेष के अस्तित्व की दृष्टि से उचित है या अनुचित यह साहित्य शास्त्रियों की बहस का एक व्यापक विषम हो सकता है। यहां पर इतना ही कह देना उचित होगा कि विचार प्रधान कहानी के लिए अनुकूल पढ़ने वाली सहेलियों का सुंदर प्रयोग कर मुक्तिबोध ने आशय और अभिव्यक्ति में संगति के महत्व को अधोरेखित किया है । मानवीय स्वभाव, पात्र का कर्म क्षेत्र, आशय की प्रवृत्ति और साहित्य में उपेक्षित ताजगी आदि को ध्यान में रखकर दिया गया शैली अंतरण अनुचित नहीं माना जाना चाहिए। उदाहरणार्थ वर्तमान प्रसंग के सदृश्य भूत कालीन प्रसंग का स्मरण मानवीय स्वभाव के अनुकूल ही है। यही कारण है कि मुक्तिबोध की कहानियों में पूर्व दीप्ति सहेली का बार-बार प्रयोग मिलता है। वर्तमान और भूत के बीच कि यह आवाजाही चेतना परिवार के अधिक अनुकूल पड़ती है।

मुक्तिबोध की भाषा प्रयोग क्षमता व्यापक अध्ययन का विषय है। यहां केवल दो बातों का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा । एक है, जीवन तथ्यों को अधोरेखित करने वाले सुखी नुमा वाक्यों का प्रयोग और दूसरी है मराठीभाषी होते हुए भी मुक्तिबोध का हिंदी पर असाधारण अधिकार। मुक्तिबोध की कहानियां यथार्थपरक हैं, लेकिन यथार्थ के नाम पर भाषा के अटपटे प्रसंग उनमें नहीं हैं। यथार्थ जीवन के कटु तिक्त अनुभव के संचित भंडार से कुछ ऐसे वाक्य निकलते हैं जो सूक्तियों के समान याद रहते हैं । उदाहरणार्थ - 'दिल्ली की सच्चाई और सही सही निर्णय से दुर्भाग्य का कोई संबंध नहीं है।' (मुक्तिबोध प्रश्नावली - 3 पृष्ठ संख्या 149), 'सांप के समय भी मनुष्य का ध्यान इज्जत की तरफ रहता है। वह पाप करते समय बाप से नहीं डरता पाप के खुलने से डरता है।'(वही, पृष्ठ संख्या33)

मुक्तिबोध मराठी मातृभाषी थे, अतः यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि क्या उनकी हिंदी मराठी प्रभावित है ? इस संबंध में इतना ही निवेदन है कि कुछ मराठी शब्दों का अपवाद छोड़ दें तो (गुंताडा, घोघरा स्वर, नक्की, भीती, काल्मा इ.) उनकी भाषा में सभी स्तरों पर हिंदी की प्रकृति का संरक्षण हुआ है। इस प्रकार, यथार्थपरक दृष्टि, निम्न वर्ग की वृत्ति प्रवृतियों का अंकन, चिंतन की प्रधानता, पात्रों के हृदयस्थ भावों की व्यंजना के लिए दिए गए अनूठे प्रयोग, वर्णन की अधिकता और सहेलियों के अत्यधिक मिश्रण के कारण मुक्तिबोध की कहानियां अनोखी बन गई है।